जागरूकता विकास शृंखला: 26
क्या
नदी फिर
बहेगी
साक्षर भारत
राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इंदौर, म.प्र.

आमुख

पिछले कई वर्षों से पानी की कमी एक बड़ी समस्या बनकर उभर रही है। बारिश न होने के कई कारण हैं। इनमें प्रकृति के साथ हमारा क्रूर व्यवहार अधिक जिम्मेदार है। कारण जो भी हो, हमें इस समस्या को मिल–जुलकर हल करने की जरूरत है। पानी को बचाने के व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर प्रयास करने की आवश्यकता है।

'क्या नदी फिर बहेगी' पुस्तिका में बताया गया है कि बारिश के जल को सहेजकर नदी के जल स्तर को बढ़ाया जा सकता है। इसके विभिन्न उपाय गए हैं। इस पुस्तिका के लेखक **श्री बाबा मायाराम** हैं। चित्रांकन **श्री इस्माइल लहरी** ने किया है। केन्द्र इनका हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

आशा है, यह पुस्तिका जल संरक्षण के बारे में जानकारी देने में समर्थ होगी। पुस्तिका के संबंध में सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

अंजली अग्रवाल
निदेशक (प्र.)
राज्य संसाधन केन्द्र,
प्रौढ़ शिक्षा, इंदौर, म.प्र.
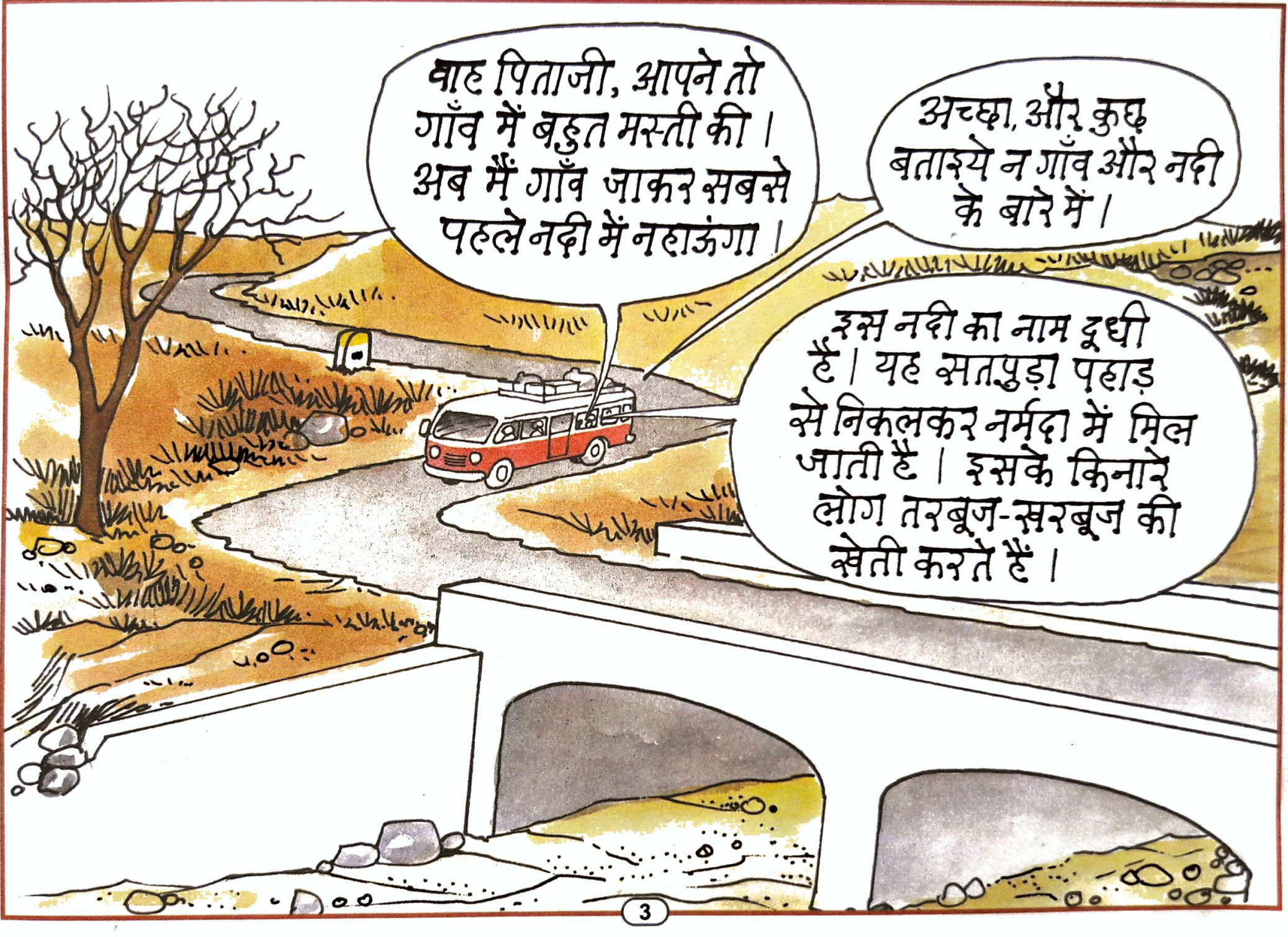
मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में पालिया पिपरिया गाँव है। यहाँ तेरह साल पहले नारायण रहता था। अब वह नौकरी करने शहर जा बसा था। एक दिन वह बेटे राहुल और पत्नी संगीता को गाँव दिखाने ले जा रहा था।

वाह पिताजी, आपने तो गाँव में बहुत मस्ती की। अब मैं गाँव जाकर सबसे पहले नदी में नहाऊंगा।
अच्छा, और कुछ बताइये न गाँव और नदी के बारे में।
इस नदी का नाम दूधी है। यह सतपुड़ा पहाड़ से निकलकर नर्मदा में मिल जाती है। इसके किनारे लोग तरबूज-खरबूज की खेती करते हैं।

तभी बस रुकी और तीनो गाँव में उतर गए। राहुल ने सीधे नदी पर चलने की जिद की। उसकी बात मानकर वे सभी नदी की ओर चल दिए। वहाँ पहुँचने पर उन्होंने देखा कि चारों ओर रेत और पत्थर हैं, पानी कहीं नहीं है।

पानी तो कहीं
दिखाई नहीं देता!

निराश होकर वे गाँव की तरफ चल पड़े। रास्ते में भीखू दादा मिल गए। नारायण ने उनके पैर छूकर कहा- दादा पहचाना? दादा बोले- अरे तू लल्लन का बेटा नारायण है न? नारायण बोला-
दादा, नदी के ये क्या हाल हो गए हैं?
जाने किसकी नजर लग गई है बेटा हमारी दूधी को? अब सिर्फ बारिश के चार महिने पानी रहता है बस। खरबूज-तरबूज की खेती खत्म! नदी किनारे मेला, नाच-गाने अब बस.... यादों में ही बाकी है।

भैया, लाख की चूड़ियों का काम बंद हो गया है। न कोसम के पेड़ रहे न लाख धोने का पानी। अब तो गाँव में मन ही नहीं लगता।

ये बातें सुनकर राहुल और संगीता भी उदास हो गए। अब वे नारायण के बचपन के दोस्त जुगल के घर की ओर चल पड़े।

दोस्त, नदी की धार क्या टूटी ? हमारी तो किस्मत ही रूठ गई। न तो मछलियां रहीं, न मछुआरे। नावें धूल खा रही हैं। नदी हमारी माँ समान है। लगता है माँ हमसे नाराज है !

जुगल, माँ हमसे यूं ही नाराज नहीं होती। जरूर हमसे गलती हुई है।

बात तो सही है। हमने अपने स्वार्थ के लिए जंगल काट दिए जो पानी रोककर रखते थे। पक्के घर बनाने में रेत खत्म हो रही है। रेत पानी को सोखकर रखती थी। घर-घर ट्यूबवेल लगने से धरती माँ का आँचल सूख गया है।

जुगल की चिंता सुनकर नारायण ने कहा –
दोस्त, तू चिंता मत कर। जहां चाह, वहां राह। राजस्थान के नौजवानों ने पाँच नदियों को फिर से जीवित किया है। उन्होंने पहाड़ियों को हरा-भरा किया। नदियों का पानी रोका। सूखी नदियों में जान डाल दी। तू हिम्मत मत हार। हम कोशिश करेंगे... हमारी नदी फिर बहेगी !

सतपुड़ा के घने जंगलों में आंजनदाना गाँव है। यहाँ रम्मूदादा रहते थे। बहुत मेहनती और धुन के पक्के। वे अपने पालतू पशुओं को दूर सतधारा नाले में ले जाते और जब तक पशु पानी पीते, वे बैठकर सोचते-

आखिर एक दिन रम्मू दादा ने खुदाई शुरू कर दी और नाले पर पत्थरों से बांध बनाने की कोशिश करने लगे। तभी गाँव के कुछ लोगों ने उधर से गुजरते हुए देखा तो बोले -
दादा, क्यों हथेली पर सरसों उगा रहे हो? पूरी जिंदगी खोदते रहोगे, पानी खेतों तक नहीं जाएगा।
कोशिश करने में क्या हर्ज है? मेहनत कभी तो रंग लाएगी।

रम्मू दादा अपना काम करते रहे। कुछ दिन गाँव वालों ने हंसी उड़ाई। बाद में गाँव के कुछ समझदार युवक मदद के लिए आगे आए। सबने मिलकर ऊंची-नीची जमीन पर नाले से खेतों तक नाली खोदी। कहीं-कहीं पर चट्टानों को भी फोड़ा गया। आखिरकार मेहनत रंग लाई और सतधारा का पानी गाँव और खेतों तक पहुंच ही गया।

जहां पहले बारिश में मक्का, कोदो, कुटकी की सूखी खेती होती थी वहाँ अब प्याज, बैंगन, टमाटर, आलू वगैरह भी लोग बोने लगे हैं। गेहूं और चने की फसल भी होने लगी है। बरसों बाद प्यासी धरती ने छककर पानी पिया। रम्मू दादा ने अपनी खिल्ली उड़ाने वालों को भी खुले दिल से पानी दिया।

यह खबर आस-पास के गाँवों में तेजी से फैल गई। लोग आंजनढ़ाना के खेतों को देखने आने लगे।
ये काम तो हम कोसम में भी कर सकते हैं!
हम ढोढर में जरूर ये करेंगे!
तेंदूखेड़ा में भी तो किया जा सकता है।
राईखेड़ा में भी!

कई जगह तो पाँच से छह किलोमीटर की दूरी से पानी लाना था। रांईखेड़ा में जंगल और पहाड़ के बीच बहती गांजाकुंवर नदी को खेतों में मोड़ने के जतन किए गए। महिलाओं ने भी भरपूर सहयोग किया। कहीं पर कई फुट गहरी खुदाई की गई। कहीं पानी का रिसाव रोकने के लिए पत्थरों की जमावट की गई। मिट्टी, गोबर और भूसे से छोटे पुल भी बनाए।

अब इन गाँवों में गरीबी और कंगाली नहीं रही। हर घर धन-धान्य से भरा है। वहाँ के बच्चे भी अब पढ़ने लगे हैं। गाँवों में पानी को लेकर कोई झगड़ा नहीं होता।
पानी सबको मिलेगा, किसी को जल्दी, किसी को देर से। इन्सान सचमुच ठान ले तो क्या नहीं कर सकता!